



### **DR. ABBAREDDY NAGESWARA RAO**

Dr. Abbareddy Nageswara Rao is widely known in the Botanical world for his outstanding contributions to the Orchid taxonomy and conservation in India. He has discovered from India maximum number (35) of orchid species which are new to the world.

2. Born on 19<sup>th</sup> June, 1954, Dr. Rao obtained M.Sc. Degree in Botany (1977) from Andhra University, Waltair. Later, with the Research Fellowship from the Department of Science and Technology, Government of India, he worked on Orchid Flora of Arunachal Pradesh for his Ph.D. thesis in Botanical Survey of India, Eastern Circle, Shillong (Meghalaya) from 1978 to 1982 and submitted to Andhra University. He was awarded Ph.D. Degree in 1985.

3. Dr. Rao served for 30 years in the Department of Environment and Forests, Government of Arunachal Pradesh as Orchidologist in State Forest Research Institute, Itanagar. Later, for 4 years, he served as the Project Director, Centre for Orchid Gene Conservation of Eastern Himalayan Region, Hengbung in Senapati district of Manipur. During the 38 years of his experience in the field of Orchid research, he has carried out several diligent explorations in the virgin forest areas of Northeast Indian states. Some of his outstanding contributions to the Indian Orchidology are the discovery of 35 new species; 46 new distributional records to India; 65 new records to N.E. India. To his credit, he has more than 200 research papers on various aspects of Orchidology published in various national and international journals. As a part of ex situ conservation enriched several orchid Gene-banks in N.E. India. He imparted training in Orchid propagation and cultivation to many Women SHGs of Adi, Aka, Apothani, Bogun, Monpa, Sherdukpen, Nishi, Kamti, Wancho, Kuki, Naga tribes of Arunachal and Manipur.

4. Dr. Rao, during his service period, also acted in ex officio, as the Chairman for the Orchid Task Force to form DUS Test Guidelines, Protection of Plant Varieties & Farmers Right Authority (PPV & FRA), Ministry of Agriculture, Government of India; Member of Orchid Specialists Group, Indian Sub Continent (SAARC) Region, IUCN ; Member in the RAC and QRT, National Research Centre for Orchids, Pakyong, Sikkim, under ICAR, New Delhi; Member of Expert Group on Botanic Gardens, Ministry of Environment & Forests, Government of India; Member of State Medicinal Plants Board and State Biodiversity Board, Arunachal Pradesh, Department of Environment & Forests.

5. Dr. Rao, in recognition of his outstanding contributions to the Orchid Taxonomy and Conservation in India, is honoured with Dr.T.M. Hynniewtta Biodiversity Gold Medal (2014) by The East Himalayan Society of Spermatophyte Taxonomy (EHSST), Siliguri; Suraj Prakash Vij Memorial Award, (2016) by The Orchid Society of India, Chandigarh; Indian Record - by Limca Book of Records (2020) for discovering maximum number of Orchid species (35) from India.



## डॉ. अब्बारेड्डी नागेश्वर राव

डॉ. अब्बारेड्डी नागेश्वर राव को वनस्पति जगत में भारत में ऑर्किड टैक्सोनॉमी और संरक्षण में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है। उन्होंने दुनिया के लिए नई, भारत की ऑर्किड प्रजातियों की अधिकतम संख्या (35) की खोज की है।

2. 19 जून, 1954 को जन्मे, डॉ. राव ने आंध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर से वनस्पति विज्ञान (1977) में एम.एससी की डिग्री प्राप्त की। बाद में, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार की रिसर्च फेलोशिप से, उन्होंने 1978 से 1982 तक बॉटनिकल सर्वे ऑफ इंडिया, ईस्टर्न सर्कल, शिलांग (मेघालय) में पीएच.डी शोधपत्र के लिए अरुणाचल प्रदेश की ऑर्किड वनस्पति पर कार्य किया और आंध्र विश्वविद्यालय को प्रस्तुत किया। उन्हें 1985 में पीएच.डी की डिग्री से सम्मानित किया गया था।

3. डॉ. राव ने अरुणाचल प्रदेश सरकार के पर्यावरण और वन विभाग के राज्य वन अनुसंधान संस्थान, ईटानगर में ऑर्किडोलॉजिस्ट के रूप में 30 वर्ष तक सेवा कार्य किया। बाद में, 4 वर्ष तक, उन्होंने मणिपुर के सेनापति जिले के हेंगबुंग में पूर्वी हिमालयी क्षेत्र के ऑर्किड जीन संरक्षण केंद्र के परियोजना निदेशक के रूप में कार्य किया। ऑर्किड अनुसंधान के क्षेत्र में अपने 38 वर्ष के अनुभव के दौरान, उन्होंने भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों के अनछुए वन क्षेत्रों में कई श्रमपूर्ण अन्वेषण किए हैं। भारतीय ऑर्किडोलॉजी में 35 नई प्रजातियों की खोज; भारत में 46 नए वितरण रिकॉर्ड; भारत के उत्तर पूर्व को 65 नए रिकॉर्ड उनके कुछ उत्कृष्ट योगदान रहे हैं। विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में ऑर्किडोलॉजी के विभिन्न पहलुओं पर उनके 200 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने प्राकृतिक स्थान से बाहर संरक्षण के भाग के रूप में उत्तर पूर्वी भारत में कई ऑर्किड जीन-बैंकों को समृद्ध बनाया। उन्होंने अरुणाचल और मणिपुर की आदि, आका, अपोठानी, बोगन, मोनपा, शेरडुकपेन, निशी, कामती, वांचो, कुकी, नागा जनजातियों के कई महिला स्वयं सहायता समूहों को ऑर्किड का प्रचार-प्रसार करने और खेती का प्रशिक्षण दिया।

4. डॉ. राव ने अपनी सेवा अवधि के दौरान, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार के लिए डीयूएस परीक्षण दिशानिर्देश तैयार करने के लिए पौध किस्म के संरक्षण और किसान अधिकार प्राधिकरण (पीपीवी और एफआरए) के लिए ऑर्किड टास्क फोर्स के पदेन अध्यक्ष; ऑर्किड विशेषज्ञ समूह, भारतीय उप महाद्वीप (सार्क) क्षेत्र, आईयूसीएन के सदस्य; आरएसी और क्यूआरटी के सदस्य; आईसीएआर, नई दिल्ली के अधीन, नेशनल रिसर्च सेंटर फॉर ऑर्किड, पाकयोंग, सिक्किम के सदस्य; पर्यावरण और वन मंत्रालय, भारत सरकार के वनस्पति उद्यान पर विशेषज्ञ समूह के सदस्य; राज्य औषधीय पादप बोर्ड और राज्य जैव विविधता बोर्ड, अरुणाचल प्रदेश, पर्यावरण और वन विभाग के सदस्य के रूप में भी कार्य किया।

5. डॉ. राव को भारत में ऑर्किड टैक्सोनॉमी और संरक्षण में उनके उत्कृष्ट योगदान के सम्मानस्वरूप द ईस्ट हिमालयन सोसाइटी ऑफ स्पर्मेटोफाइट टैक्सोनॉमी (ईएचएसएसटी), सिलीगुड़ी द्वारा डॉ. टी. एम. हिनाइल्टा बायोडायवर्सिटी गोल्ड मेडल (2014); द ऑर्किड सोसाइटी ऑफ इंडिया, चंडीगढ़ द्वारा सूरज प्रकाश विज मेमोरियल अवार्ड, (2016); भारत की ऑर्किड प्रजातियों की अधिकतम संख्या (35) खोजने के लिए लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स (2020) द्वारा भारतीय रिकॉर्ड से सम्मानित किया गया है।